

शुद्ध श्यामापद्विता. पुमोग चूडासापी विविधवेष्ट्यापि चार

पंचमत्त. २८॥ धनमंत्र॥ शुर्वानुरीते नमूकवसंप्रसिद्धगृह २०१॥ पुनः॥ श्रीं श्रीं किंवसमानयस्याहा॥

3418

ASHA ARCHIVES

सोः सुं धीं ज्ञाना

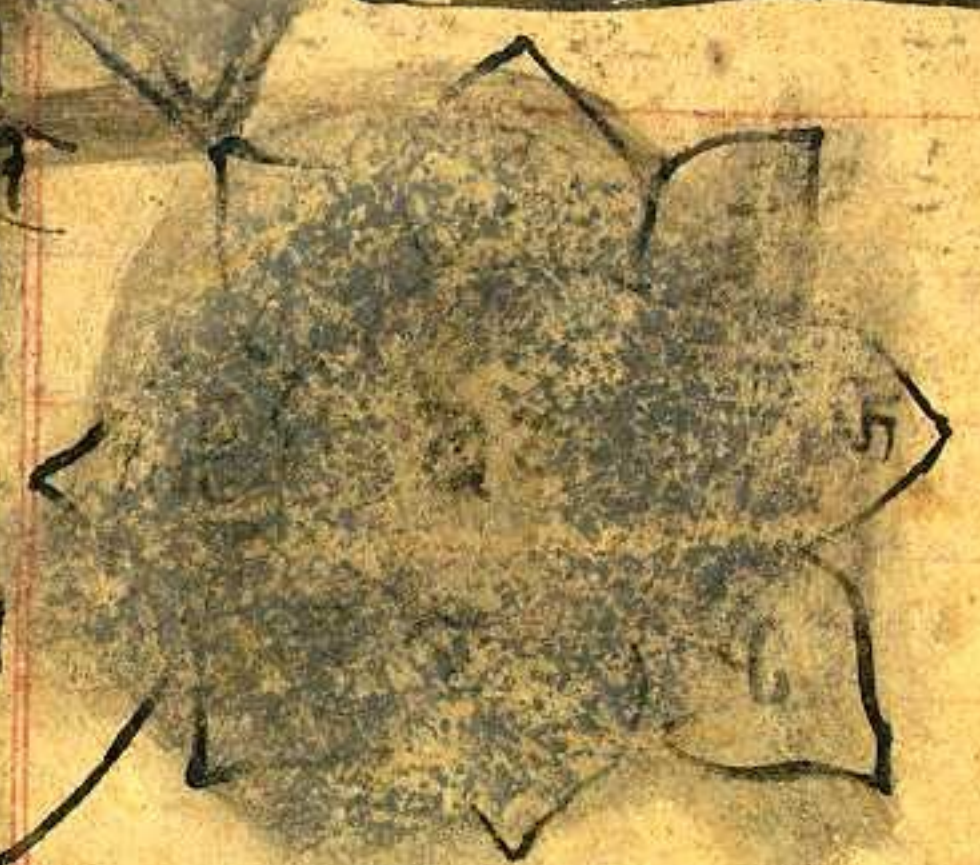
धूम्रं यनायनयुग्मं धीमिलानन्दनाथरुद्रगीयनाम्ना दत्रीं धीयादूकां युजः ॥
धूम्रं यामिनमः ॥ अथमानसायवानयुजा ॥ लंघिधियात्मकं गन्धसमय्य
या मिनमः ॥ कनिष्ठिकया ॥ हं अकाशात्मकं यूर्यसमय्ययामिनमः ॥ अना
मिकया ॥ यं वायात्मकं धूर्यसमय्ययामिनमः ॥ मध्वमयां ॥ नं नजसात्मकं
दीप्यसमय्ययामिनमः ॥ नज्जुनियाः ॥ वं नसात्मकं नेवद्यं समय्ययामिनम
॥ अंगुष्ठया ॥ नं आवमनीयं नमः ॥ क्रीनामूलं नमः ॥ ॥ युग्मं यथा
गकिं जयन् ॥ ॥ युक्तागि युक्तागि हृत् गृहानास्मन्कनं जयं सिद्धि

रुवनिमदत्री जययुग्मं निवदिनं ॥ जयं निवदयामि स्त्राह ॥ ॥ सुतः
॥ नमस्तुनाथरुगवन् धिवाययुग्मं यिन विद्यावगानसं सिद्धी स्त्रीकः
नान्यकवियह ॥ ॥ यश्चमूदारीः युगम्यनि ॥ ॥ विनायक्या ॥ यावया
मः ॥ अथादिमठं गन्यासादि कं विधाय ॥ मूला धानादि वासनधन
युक्तालिगविदग्निमधिष्ठितकूलकूलनी निजश्च दवगानजामयी ॥
ध्यात्वा ॥ अष्टवक्ररुदनसहस्रदलकमलकर्णिकायां यनविवनसमं स
मनहसी विचिन्तय चक्रवक्रकमनयूनमूलाधनया कं विचिन्तयन् ॥

ननाम ननयनं नन्दसंदाहं निजं जीर्णं स्वद्वन्द्वनास्वयं विराज्य
 ध्यायनं ॥ कजालवदनं न्यादि ॥ ॥ मानसायवाजः संयुक्तं ॥ यथाशक्ति
 उयं ॥ शुद्धादिना निवय ॥ स्मृतं ॥ कयून गोजादि ॥ कवचसदृशनामाः
 दिशिः संमुख्य ॥ ॥ यथमूलादिशिः यगम्या ॥ यथासुखं विहजन् ॥ ॐ ॥
 नियानः कथं समाकः ॥ ॥ मूधस्तानविधिः ॥ नयादीगत्वा ॥ (होत्राय
 ॥ हस्ते यादय काल्य ॥ ॥ ॐ कौविशुद्धधर्मो गयनी सर्वया यो निगमया ॥
 (होत्राविकल्पं नयनयद्वं रुद्रस्याह ॥ ३ ॥ ॐ निशि जात्रम्या ॥ कौवजादक

नद्वं रुद्रयादय काल्य ॥ ननेव हस्तय काल्य ॥ मूलनात्रम्या ॥ दक्षधावः
 नकृयाते ॥ कौसर्वायाय निगमयस्याह ॥ ॐ मूधन विद्वं रुद्रस्याह ॥ मू
 खय काल्य ॥ स्तुत्नीनिमज्जमनुस्तानं कृयाते ॥ ॥ मूधसंकल्पः ॥ ॐ ॥
 मूय ० श्रीदक्षिण कालीयार्थं मनुस्तानमर्कं निम्या ॥ उल्लिखिका ॥
 यनुलिखित्वा ॥ सूर्यमण्डलान् मूकं मूडया ॥ ॐ गंगायामूनवेव ग
 दावगीसनस्वर्गिनमो दास्यन्धूकावगी उल्लिखितं निधिं कुरु ॥ ॥

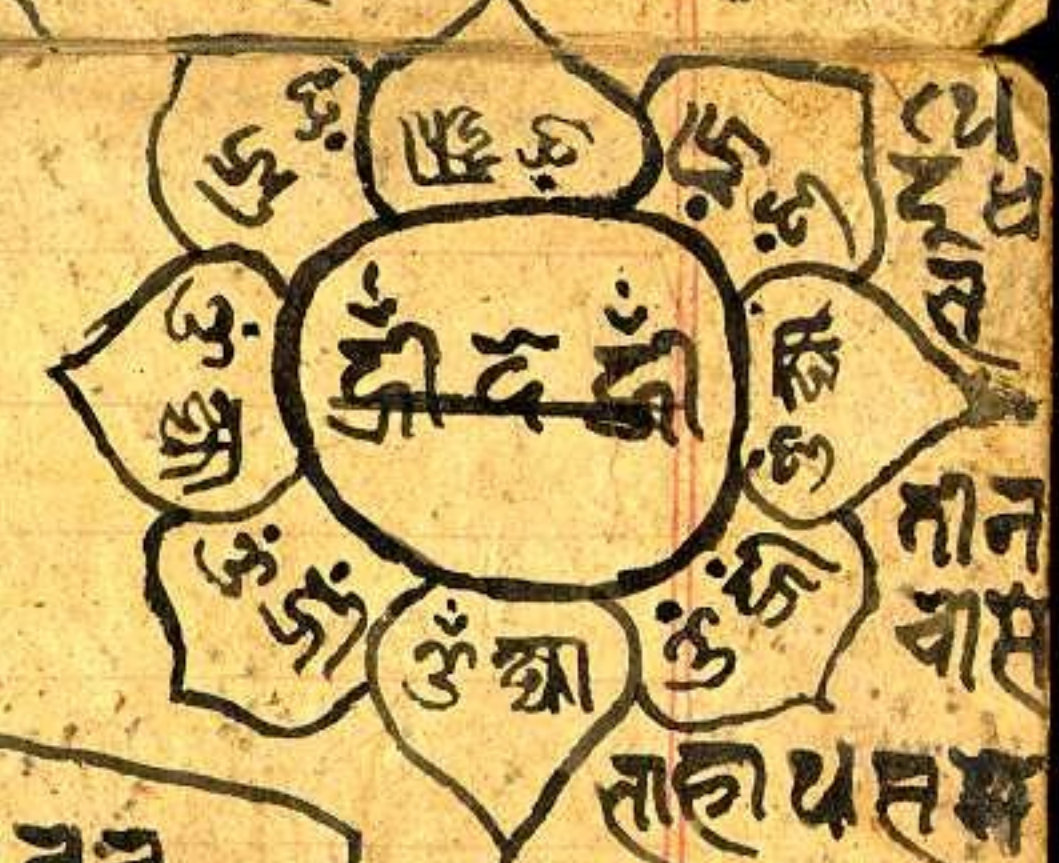
॥ कूं कूं मनुजं यत्तु सवाह्यं चरावती रुय ॥ मा
 नाम दयाभावदयू यकासि कयाथ जनुक
 हा नम्राय ॥



सुतानन
 वसवायं
 न वेति
 पति सं नव
 वाया व थव
 लं नत लाव
 तय सं ह
 नयाया ॥

कूं कूं मं गलावन कुज
 यत्तु सवाह्यं वसयाय ॥ थ

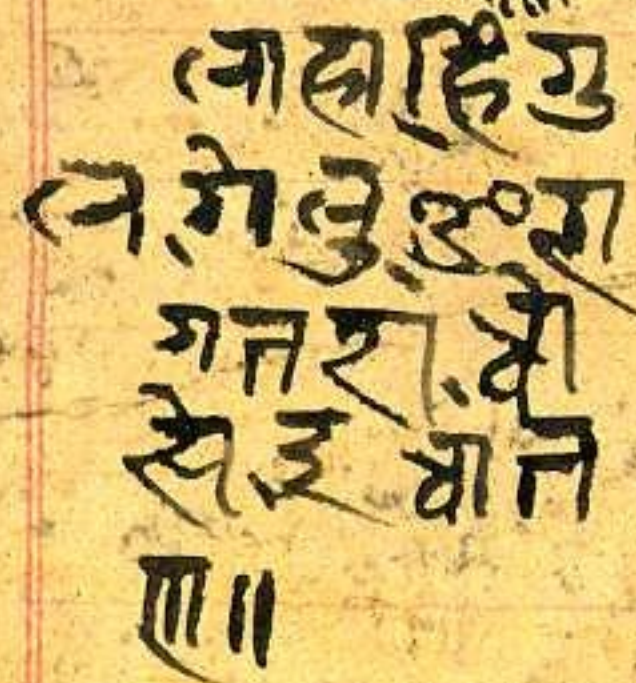
कूं कूं मं गलावनन
 कुजं यत्तु स
 वाया व थव
 लक सी स
 थ द न वा
 वा व ल स
 श्री क व
 नयाय ॥
 थ न



यस वहि वनम सान
 स लू कुजं यत्तु स
 सी ल थ स व सी मा स न
 दावल म द य क ॥

कूं कूं मं गलावनन
 कुजं यत्तु सवाह्यं का वा
 या के थ न सी ला ग्य रुय ॥

ताला थ स म
 व सी उ स
 स्या ग या य
 क स या ग
 ॥



ॐ	ॐ	ॐ थास
ॐ	दवदरुव स्यवन	ॐ
	ॐ	

कूं कूं मंगल सावन उर्जय नु सखाय खूं न वहु
था सं न वला खस समा सथ वना म म वया नाम
खाय धन न वस्य रुला ॥

वा ली ल ती
 हू हू द व द लू न ग दू हू द

नराम ह्यंवा न

二二三

५
 ६
 ७
 ८
 ९
 १०
 ११
 १२
 १३
 १४
 १५
 १६
 १७
 १८
 १९
 २०
 २१
 २२
 २३
 २४
 २५
 २६
 २७
 २८
 २९
 ३०
 ३१
 ३२
 ३३
 ३४
 ३५
 ३६
 ३७
 ३८
 ३९
 ४०
 ४१
 ४२
 ४३
 ४४
 ४५
 ४६
 ४७
 ४८
 ४९
 ५०
 ५१
 ५२
 ५३
 ५४
 ५५
 ५६
 ५७
 ५८
 ५९
 ६०
 ६१
 ६२
 ६३
 ६४
 ६५
 ६६
 ६७
 ६८
 ६९
 ७०
 ७१
 ७२
 ७३
 ७४
 ७५
 ७६
 ७७
 ७८
 ७९
 ८०
 ८१
 ८२
 ८३
 ८४
 ८५
 ८६
 ८७
 ८८
 ८९
 ९०
 ९१
 ९२
 ९३
 ९४
 ९५
 ९६
 ९७
 ९८
 ९९
 १००

नस
प्र
प्र
प्र
प्र

यसवदधसतिवनकुञ्जय
 मचाहंसकुञ्जय
 नककाकाका
 यनद
 दासायवी
 यनधयस
 नसकुयाय
 वरक॥



द व द रु
 द व द रु
 द व द रु



ॐ ० द मानं
० कु मा य २
॥ नि म्ब य य न स
न न्ना म न न ॥

四出出出出出

ॐ नमः ४ दक्षिण कालिकाय ॥ ॥ यज्ञा ज्ञाय ॥ धीनाथादि ॥ सिद्धि नमु ॥ कर्पूना ॥ ॥
दानयुजा ॥ ॥ ॐ नैदीधीमहाबद्धीधीयादुकां ॥ उवस ॥ ४ संसनस्ये नमः ॥ ख
वस ॥ ४ दूदूग्गम्याये ॥ दथस ॥ ४ हं हं निधय ॥ उवससि ॥ यं यय निधय ॥
खवससि ॥ धनथी ॥ क्ली कामदवाय ॥ उवससि ॥ वं वसनाय ॥ खवससि ॥ ध
नथी ॥ गंगनाथाय ॥ उवससि ॥ कौ कुरुनाथाय ॥ धगुलिसं ॥ गंगनाथे ॥
खवससि ॥ यं यमनाये ॥ खवससि ॥ ॥ उवकादुकास्यं युजासुनदुकावन ॥
यद्रासननयाना ॥ अचमन ॥ ॥ क्ली आत्मनर्त्त ॥ धयामि नमः ॥ दीविशानर्त्त

॥ क्ली वनर्त्त ॥ ॥ कलाठकास्यं ॥ क्ली मयस्यं नुयरुता यरुता रुविर्मासि ना
यरुता विष्णु कलाठकास्यं नुयरुता रुविर्मासि ना ॥ अकनकाया वदहादी गङ्गाहाला ॥ नाल
इयान ॥ ३ ॥ ॐ वामुयूयय नमः ॥ दि द्वाहं युजयामि ॥ यथीत्ययतिमनुस्य ॥
मनूययय ॥ ४ सुनल ॥ ४ कुम्मादवता आसनविनियोग ॥ ४ ॐ यथीत्ययाध ॥
नालाका दवीर्त्त विष्णुनाथना ॥ ४ धनयमानिर्त्त यविर्त्त कुनूवासनं ॥ क्ली आ ॥
धनहाकि कमलासनाय नमः ॥ नं अग्निमनुलाय नमः ॥ अग्निपाकानरालयस्याय
कु ॥ ॥ ॐ उद्धकणी विष्णुया क्ली मासि ॥ ४ गितनाडिनि ॥ निष्ठदविष्टिखाम ॥ अयाम् ॥

(६) अथ जातिन॥ ॐ ह्रीं ह्रीं मणिधनिवजिनिम दानावुवमां नरु २ ह्रीं ह्रीं ह्रीं ह्रीं ॥ ५
वजिजसगुनूयुजा॥ ॐ यजनिवादि गुनूयानमः॥ ॐ यं गुनूयानमः॥ ॐ यं यजमगु
नूयानमः॥ ॐ यं यजयन गुनूयानमः॥ ॐ यं यजमात्मगुनूयानमः॥ ॐ निगुन
मस्कन॥ खवस॥ गुं गुनूयानमः॥ उवस॥ गंगदय नयनमः॥ हवन॥ धीदकि
नकालिकायेनमः॥ ॐ निनमस्कन॥ ॥ अथरुतदुद्धि ॥ ॐ अथहीरुतदुद्धिम
रुस्यवक्रविष्णुनूदस ययनमः॥ विजसि॥ अथयूसामानिदुद्धस नमः॥ मूख॥ वायू
ननिवगूय कागदवनायेनमः॥ हदि॥ हलोवीजायनमः॥ नाशो॥ स्वनाग कयनमः

॥ गुक॥ अथककिलकं॥ पादया॥ ममहानीनदुद्धि (५) अथविनियोगः॥ माहकावल्क
नवठंगन्यास॥ ॥ ॐ निमः॥ ध्यान॥ वक्रहलागिनस्कंच स्वर्गसुयकुउदयं
सूनायानददायकं गुनूतल्यकटिद्वयं॥ नत्सिगर्जयददन्द मंगयलनयानकं
उययानक नामानं नरुमध्विलाननं॥ खड्गचर्मधनं कुनं कूकीयार्थविचि
नयन॥ ॐ निश्चान॥ ॥ ॐ ह्रीं ह्रीं ह्रीं ॥ ५ मरुतकुगुलीसूयमानानवक्रनयस
काय॥ यं ॥ ५ खवनदूकाय॥ यं ॥ ५ नयादनिय॥ यं ३२ उवननालन॥ साखन॥ ॥
नं ॥ ५ उवनदूकाय॥ नं ५ नयादनिय॥ नं ३२ खवननालन॥ ॐ निदाहन॥ ॥

वं १६ खवनदूकाय ॥ वं ३४ नयादतिया ॥ वं ३२ उवननालन ॥ ॐ निष्ठावन ॥ ॥ लं १६ उ
वनदूकाय ॥ लं ३४ नयादतिया ॥ लं ३२ खवननालन ॥ ॐ निधिष्ठीकनर्ण ॥ ॥ हं १६
खवनदूकाय ॥ हं ३४ नयादतिया ॥ हं ३२ उवननालन ॥ ॐ निदहउत्यलि ॥ ॥ हं ३
स४सा हं थमनुन कूळुलिनीकाना दयावमूलाधनसंतय ॥ ॐ निरुतद्युद्धि ॥ ॥
नूथयावयतिष्ठा ॥ ॐ नूस्थधीयावयतिष्ठा मनुस्थवक्रविष्णुमहेश्वरनमः वयनः
म४ ॥ गिनसि ॥ म ग्ययूसामाथर्वनचुन्दसनमः ४ मुख ॥ धीयाववकि यनदवताये
नमः ४ ॥ ददि ॥ ॐ वी उं ना सो ॥ दी वकि गुक्का ॥ को कील कं या दया ४ ॥ ममयावयतिः

[illegible]

याता लस द नू हा स मा डा धि नू हा क ना डे ४ या हा का द धु मि नू रु व म धि गु र्णं नू कृ र्णं या हा वा हा
नू वि डा र्णं स क या ल वि हा य न व य र्णी यी न व का नू हा नू द वी वा ला क व र्ण र व रु स
ख क नी या हा हा कि ४ य ना हा ॥ नू नि धा न ॥ ॥ उ व ला हा न न थ व रु द य स धि र्णं सा या
ल या ल या ॥ उं नू दी ही नू दी कां य न ल वं र्णं यं स रं लं कं रं स ४ सा रं म म या हा नू रु या हा
नू रु स्मि न ४ ॥ उं नू दी ही नू दी कां य न ल वं र्णं यं स रं लं कं ४ रं स ४ सा रं म म जी व नू रु
जी व नू रु स्मि न ४ ॥ उं नू दी ही नू दी कां य न ल वं र्णं यं स रं लं कं रं स ४ सा रं म म स र्वे न्द्रि
या नि द न ल क व रु डि का या हा स र्व या हा ॥ उं नू दी ही नू दी कां य न ल वं र्णं यं स रं लं कं ॥

रं स ४ सा रं स र्व या हा नू रु हा या नू रु दे वा ग ह्य स र्व वि न रि ष नू रु श्वा हा ॥ कं लं रं स रं यं र्णं वं लं नू
यं कां दी नू दी नू दी ॥ नू ति या हा य ति षा ॥ ॥ नू थ मा रु का न्या स ॥ उं नू स्य ही मा रु
का न्या स स्य व रु म य य न म ४ ॥ नि न सि ॥ ग य ती च्छ न स न म ४ ॥ मू र्वा ॥ ही मा रु का स न स
ती द व ता र्णं न म ४ ॥ द दि ॥ रु ला वी डा य न म ४ ॥ ना री ॥ स्य ना हा क य न म ४ ॥ गु रु ॥ नू
थ क की ल का य न म ४ ॥ या द या ॥ म म धी वि डा र्णं ल न उ य वि नि या ग ४ ॥ नू ति म
या दि न्या स ४ ॥ ॥ नू थ क न न्या स ४ ॥ नू कं रं गं दं नू नू गु षा र्णं न म ४ ॥ नू वं नू
उं नू नू र्णी नू र्णी नी र्णं र्णं ॥ उं रं रं रं रं रं उं म ध्र मा र्णं व र्णं ॥ नू रं थं दं थं नू नू नू

मिकायां दू॥ उं यं रं वं रं मं उं क निषि कायां वीषट् ॥ ॐ यं नं लं वं हं वं सं रं लं कं ॐ ४॥
 क न त ल क न य य या रू ॥ ॐ ति क न न्यास ॥ ॥ ॐ कं ४ दं द या य न म ॥ ॐ वं ४ ॐ
 नि न स स्वा टा ॥ उं टं ४ उं णि र वा यो व र व ॥ नं रं ४ नं क व वा य दू ॥ उं यं ४ उं न व र य ॥
 य वीषट् ॥ ॐ यं १० ॐ ४ स वी (ॐ ॐ य रू ॥ ॐ ल क न्यास ॥ ॥ या धा याम ॥ ॐ १६ ॥ कं
 २० ॥ यं १० ॥ २ ॥ ॐ ति या धा याम ॥ अथ नू म्मा रू का ॥ कं ० ॥ ॐ न म ॥ ॐ २ ॥ ॐ २ ॥ ॐ २ ॥ उं २ ॥
 उं २ ॥ मं २ ॥ मं २ ॥ ॐ २ ॥ ॐ २ ॥ नं २ ॥ नं २ ॥ उं २ ॥ उं २ ॥ ॐ २ ॥ ॐ २ ॥ दं द य स ॥ कं न म ॥ खं २ ॥
 गं २ ॥ घं २ ॥ ङं २ ॥ चं २ ॥ छं २ ॥ जं २ ॥ मं २ ॥ ॐ २ ॥ टं २ ॥ ॐ २ ॥ ना रि स ॥ उं न म ॥ टं २ ॥ हं २ ॥ नं

२ ॥ थं २ ॥ दं २ ॥ धं २ ॥ नं २ ॥ यं २ ॥ रं २ ॥ लिं ग स ॥ वं न म ॥ रं २ ॥ मं २ ॥ यं २ ॥ नं २ ॥ लं २ ॥ अथ न
 स ॥ वं न म ॥ हं २ ॥ मं २ ॥ सं २ ॥ ॥ अस्मा स ॥ हं न म ॥ कं न म ॥ ॐ ति अ नू म्मा रू का ॥ ॥ अथ
 बुद्ध मा रू का न्यास ॥ अ न ॥ य ॥ अ ॥ ह ॥ रू ॥ रू ॥ वि ॥ वि ॥ न व द न दा या द य कू कू दि व का द हा
 म्हा व क य दी क लि न हा णि क ला मि नू कू न्दा व दा तां ॥ अ क म कू कू म्हा वि न्ना नि खिल
 व व क न गू कू ण यि द्म र्मा म कू कू ल्या व रु कू सु न उ घ न रु न रा न ती गां न मा मि ॥ ॐ
 ति अ न ॥ ॥ ॐ न म ॥ नि न स ॥ ॐ २ ॥ खाल ॥ ॐ २ ॥ उ व मि खा ॥ ॐ २ ॥ ख व मि खा ॥ उं २ ॥
 उ व द्वा स या न ॥ उं २ ॥ ख व द्वा स या न ॥ मं २ ॥ उ व द्वा स ॥ मं २ ॥ ख व द्वा स ॥ ॐ २ ॥ उ व द्वा स

ॐ ॥ नं २ ॥ उववाह ॥ लं २ ॥ खववाह ॥ वं २ ॥ मिलखा ॥ हं २ ॥ उवयाक ॥ यं २ ॥ खवयाक ॥ सं
२ ॥ नूगलनलाहानलं उवखव ॥ हं २ ॥ नूगलनरुनिलं उवखव ॥ लं २ ॥ नूगलक ॥ कं २ ॥ कू
थस ॥ ॐ ॥ १ ॥ गीगसकलदयायकयाय ॥ ॥ ॐ ॥ निहृद्वनूयसृष्टिमारुकान्यास ॥
॥ अथविन्दुविसर्गयूकस्त्रिनिमारुकान्यास ॥ ॐ ॥ अस्यहीविन्दुविसर्गस्त्रिनिमारुकान्यासस्य
वक्रमयेयनमः ॥ द्विगसि ॥ दवीगीगयनीचन्द्रसनमः ॥ मुख ॥ हीमारुकासनस्यनीद
वतार्येनमः ॥ ॥ हलावीजायनमः ॥ नारी ॥ स्वनाहकयनमः ॥ गुह्य ॥ मूयक ॥
कीलकायनमः ॥ यादया ॥ ममहीविद्यागहनउपविनियोग ॥ ॐ ॥ निष्प्रादित्या

क॥ सं ॥ नूगलनलाहानलं उर्वखवं ॥ हं ॥ नूगलनलुनित्वं उर्वखवं ॥ लं ॥ नूग
लक॥ कं ॥ नूधूस॥ गं ॥ गिनसि॥ मं ॥ खाल॥ रं ॥ उवमिखा॥ वं ॥ खवमिखा॥
उं ॥ उवकासयान॥ उं ॥ खवकासयान॥ मं ॥ उवकासा॥ मं ॥ खवकासा॥ उं ॥ उ
उवकागाल॥ उं ॥ खवकागाल॥ नं ॥ थं थूकूथूसि॥ नं ॥ थं थूकूथूसि॥ उं ॥ थं थू
वा॥ उं ॥ काथूवा॥ मं ॥ थं क॥ नू ॥ मस॥ कं ॥ उववाहाला॥ खं ॥ उवचूला॥
गं ॥ उवकचला॥ घं ॥ उवकालायाल॥ दं ॥ उवकालाया॥ चं ॥ खववाहाला॥ कुं ॥
खवचूला॥ उं ॥ खवकचला॥ मं ॥ खवकालायाल॥ खं ॥ खवकालाया॥ टं ॥

कृत्वा ॐ शं ख व क्काला वा ॥ मं शं ख व क्काला था ल ॥ ऊं शं ख व क्क च ला ॥ चूं शं ख व वृ
 ल्या ॥ यं शं ख व वा हा ल ॥ दं शं ख व क्काला वा ॥ घं शं ख व क्काला था ल ॥ गं शं ख व क्क च ला
 ॥ खं शं ख व चू ला ॥ कं शं ख व वा हा ल ॥ ॐ ४ शं म स ॥ ॐ र्थं क ॥ अं शं का थू वा ॥ उं शं
 र्थं थू वा ॥ उं शं का थू क्क थू सि ॥ उं शं र्थं थू क्क थू सि ॥ ॐ २ शं ख व दा ना ल ॥ ॐ २ शं ख व दा
 ना ले ॥ मं शं ख व क्का सा ॥ मं शं ख व क्का सा ॥ उं शं ख व क्क स या ना ॥ उं शं ख व क्क स या ना ॥ वूं २
 ॥ ख व मि खा ॥ ॐ २ शं ख व मि खा ॥ ॐ २ शं ख व ल ॥ ॐ २ शं वि ज सि ॥ कं ५ ॥ सर्वांग स व्या य
 क या य ॥ ॐ नि वि न्द्र यू क्क सं हा ज मा ह का न्या स ॥ ॥

न द रु न वि ना श (ग) न द रु न वि ना श (ग) न द रु न वि ना श (ग)
 न द रु न वि ना श (ग) न द रु न वि ना श (ग) न द रु न वि ना श (ग)

२ श्री वासुदेवाय नमः कुरु सावन श्री २ म २

१ ॐ २ श्री दशै नमः ॥ ॥ यथा गु ॥ ॥ श्री कं थ कं थ लू थी ता ध न द स व श्री श्री ना थ व द
 सि क्ता दि स ना न रु श्री ४ श्री ४ श्री य दा र व रु सा उ ग ना न ल श्री ॥ गु न व न न सः
 ना उं लं के नं आ नि रु न्द रु नि न न स न ध रिं वा र्ध नी मा रि व के र स क ल गु ह वि
 धि क्ता स व रु का नू रु क्ता न नू व व न म ना रि स र्व कालं न मा मि ॥ ना क्ता न ग
 वा न क वि ल ग वा आ ना उं लं कौ मा न म दा न्ध व द्वा ॥ द श न नं य द म ता या नं
 न सि र य न सं स न ल य य लो न ॥ स द नं या दा क्ता उं ना ना द नी य स क्ता न उ न
 ल ४ ॥ सि द्धा द श न क्ता लो य या ग व उ म नि म्भ द्वा ॥ का स रु क्ता वा र्ध नी ग नः
 १ वं वा मि के रु क्ता स ते ल्ध ते रिं य ज य के दि द स रि क्ता यं य या ग व उ म नि न व य न म
 या श्रु त सं स दि ना उ न सी ॥ म य जी व न य न न स वि धि क्ता नं ध नं को रु क्ता द हा क्ता

वि कि र्ता न नं य ग ति र्ध यं वि कि र्ता
 न ४ ॥ सि क्ता स रु न मा रु ना नि क्ता रु ना वि क्ता
 न ४ ॥ सि क्ता स रु न मा रु ना नि क्ता रु ना वि क्ता
 न ४ ॥ सि क्ता स रु न मा रु ना नि क्ता रु ना वि क्ता

कं समान्मकं सर्वं । अंसनकं मूलं दधनकं जालं गच्छं ॥ वसवसति सनतः ४ मः
नसिंहौ दानयुधौ । मिश्रितं समविशालं दीयत ऊह्यवानं वरुणियुगसुवायो
हिक्रि काकाग्रकासः सनियतमिह जीवन् यद् गच्छन्त्यात् ॥ नतिमद ऊसनतं स
गलकासु विहि नद्यं सतनवना रिशोदयुक्तैः समांसैः । वरुणिमनूतिया ना
मूर्च्छितानस्यया गतः समनकसितकानि जीवितं ना जहाति ॥ ॥ जायन्त्योः
मिसायाः सती एकोऽयं यासिंवा एया वीलेया वरि कुवत्वं दावतो ए निवो
निवो सा दुदु तो ले ताम्बायु ॥ सृंगारया दानसती वसवसति वरुणे उमा एतः

या लं ह कसि समरागया दाव ह सव वथ य स द्वा ससथं न ताम्बायु व ॥
सियमान दा सव ववी ऊ द्यत जाय सया या ही द्वा ससथं न ॥ ॥ जीवितं न जः
मावी ऊ द्यतं मू गान कामधुः । नतैः ४ ह ह त वया एतल मृतं न स्या न्य वा धयत्
॥ द्यत मधु निषिदि हर्मयं मा जानि ता ल्यां के न ट गु लयू ता या या ऊ न्मा सु
सूतैः । सयदिव स रि न रि ह रु न स्यं मे नू यं वि न मृत मयि सत्यं वा धया का
सद ह ॥ ॥ द्यत कसि मा सखा या हि रु ति न लि कु द मया कामि सा या ही थ
त सम राग न द्वा ससथं न सि क द्वा म्बा च के ॥ ॥ का ला व ती वरुणि त ४ य नि

विष्णु का सं म ह्यं न ना वि ऊ य न न वि वं नू ड ॥ न ह्य न यान वि धि ना स मि स वि त
 न या ति ह द व व द वी स न द द क न ॥ ॥ का स य नि दान य नि द न यो व सि य ना
 न सा ल्वा सा स्वा न या ला न द्रा स स र्थ न त्वं न स य स य स्व स ल्वा ला स्वा न या ला द व म्वा
 ना स म्वा य ॥ ॥ **ॐ ति य द्रु जी व य र्था य य थ मः** ॥ ७ ॥ ॥ उ व ति अ ठि ति या का
 दा रु व र्थ हू हू ले न थ सि धि नि रि रि र्वा पी त सा ने स्व र व ले ४ कि न स क स स र्वा नां
 न द सा न स या म् ॥ उ न ति व सि न द न्द ध न द न्द य थ र्का ॥ ॥ कि हा स स्वा न मि व
 किं सि न सा र्वा न यि या सा न सिं न द न व थ न द्रा स स र्थ न व सी न ना क ॥ ॥ ॥ स र न काः

म ध कं वा उ षां षा मि कं दी न म च्छ स जा न हं नू ॥ ॥ ब्र ह्म सा या हित का न्ति तं त द्वा तं व स
 ना द न ह न्वा न व द्म न मी ॥ ॥ ग ल्ध कं मा न न या व स द्द द्द स हा र्थ य स न र्वा द
 य न स र्वा न व सी य सी न ना या ॥ ॥ वं की स य गां स वि नं वि म र्थ दी न न वि शी त नः
 सं ह व न । उ क्ता क य हू द सि वि मु वा दी ला ग स म्वा न न द द क न ॥ ॥ राः
 र्जा या ह स नां हा नां त्वं तु सि सिं या न स न स्वा स सं ख र्था की व न य थ र्वा न स र्वा व सी
 त ना म ॥ ॥ स्व न व वा म न व सी रु द नि वा र्वा न म पु नि म्म सं । न की क य स मां स क
 सि न् वां की ना य म् नि उ क रि न् ॥ ॥ स्व न वा गु उ गु र व न म पु नी सा हा र्जा र्जा

याह संखननयाव ॥ ॥ एकदिनाथननमासकमासक दद्या याव हासकमासमयनं
 इर्लमिदं नमादि कलीटं हनिमसं ननवांगनसानी ॥ ॥ द्वा सद्गु सक्ती सासकक
 द्यलकसिवासनववसीयलितानासा ॥ ॥ मूलैकू सा कुकिं कुक् विनायलसहर्गन
 ना उक्तायमा नयानिलं साकासकालवर्किं नं ॥ ॥ मनाकू द्य वसकसस साख
 लय १०० तां ॥ ॥ ॥ श्रुनाथ ४ मुरुग ४ कानः कामिनी कनवसल ४ दिहासायूनय
 नगल्ये जीवद्वयसुनर्गय ॥ ॥ निः नाग शयवसाययसायू नूवरिं नीव का
 मिनीद काया प्राग शयवसाय ४ सास नदं म्नाय ॥ ॥ **वृत्तिनसयनयथा**

यविधिदितियसमाक ॥ १ ॥ ॥ आयून ना गता विद्या डिगी साथमनसि ता
 नूयजीवनलावर्धं नसायान ऊथारु वत ॥ नूचलसिखिक सममूखिनं
 तिदिनं लनिनामदासयमूतं रुम्यनालनग धिदिधमन ४ म्खायां ॥ २
 ॥ ॥ श्रुत्ययस्वानसादं विद्वयादासहाय ॥ ॥ द्य वृखलसिखिसायी ल्वतां काटां द्य
 वा नि ४ धिदिदी ॥ द्युतिना न्धमखायां स ता रुसल्यमायानि ॥ २३ ॥ सादं सन
 यल्लदं ल्वनकारं गलयासंखननयाव ल्वलया करसमाय ॥ ॥ पुराहं कि
 नेकाय ४ वासिह नधूसविषा ॥ शुभासुखनसक क वकु ववर्ध ४ ननवि

॥२५॥ यथादि न नानधनयल कसि न वस न या या गुल सक्ति दाने दायमः
 जीव ॥ ॥ उहती जीवितं मार्गक न समुक्ति न ॥ नं तुलीय कौटि वि (लुन
 पूर्व मास्य हल स ॥ २५ ॥ हं ग ना उ व वै क न डान व नी स व दू दू क मा
 नी मान लय ॥ ॥ ॥ रा वा क स्य व नि व क ह ला ति य कं वि क्का स र ह नि वि
 सि य लु द म या यी । स म्य र्थ ॥ ॥ ॥ य थ म मू त उ ना य वू लू न म् ॥ ॥ ग ख
 ल न सा मि य रि ध मा न ॥ २३ ॥ ॥ र व त स र्क ॥ ॥ ग या क वू र्ति ग दि न कू दू न या
 व र्दि द क सा या सौ यी क्ति स वा व य का या व वा न का या वा व दा न थ न स क्क

न कौ रा ल या य रि ध मा न ॥ य दा स द्य ॥ का क ना ऊ य ति न स ल व न र ता य ह
 ता यी मा मा द ल य दि स न ता स न्द य या ॥ त दा व धा म लू य उ ति वू ट व द्नी म द
 त न त ना ग म्हा सा नि गी ति नी स म ला गं म दू व त ॥ २१ ॥ म जा य ल वू क्ति सि
 या म् व वा नां यी नां का या व ॥ ॥ उ वा क या य ॥ २६ ॥ य थ य थ न सा उं क ग ला सा ने
 पू रं वू ॥ त थ त थ य व द न दा डि मी कू स मा कू विं ॥ २२ ॥ दा त गं ध क थ न
 थ न लू धा ऊ वा व नि रु य ॥ ॥ ॥ नि लां द स गु ल उ क्का व न जी व क सो न स ॥
 म स द्य ॥ स र्व सा ह नी हा त व धी य जा य त ॥ ३० ॥ न क स ग्ग त न क लं दा व न या जी

दनकलकावनससंक्षसयथवससन्याचूनमाससय ॥ जगवधीइय ॥ ॥ जव
 दहागुलाकुर्यं, खलखलकुमान् ॥ जाफसकमईखलखलवनलवजाय
 त ॥ थच्छंदिदंसीय, खलवनीयदलाय ॥ ॥ ३२ ॥ अतः ॥ डालकंदसंदका
 यलंडानावमित्तययक ॥ ॥ वलासवृक्षतायनसामुदंसतराविर्न। वि
 वरु ४ वक्रवायनहमाद्यातंकनामई ॥ ४ ॥ ८० ॥ वलासवायातीननकीस
 नकीहिय ॥ ॥ नमस्वठिकातीक्ष्णोनिनीयथाकुर्मः ननुसामानिवाता
 नि, यलान्यादायाचूर्णयन् ॥ ८८ ॥ वक्रकृष्णसुं वीनी शुभ्रस्रवाधिसागना

४। वंक्रय व्यामृतावानी, लावयदक विहानिं ॥ ८ ॥ सिंघानवा, विंवलिकिवा
 याननीकूट, वंक्रय व्यामृतावानी, लावयदक विहानिं ॥ ९ ॥ सूवर्त्तकनकस्य वं
 सुख गुच्छ दयान्वितं ॥ लिफय वृत्ताद्यानि, नृदादिगुनसंहरति ॥ १० ॥ लं
 दाधनयूयामनिकायावनननिष्ठाया ॥ ॥ मधुककसुमनम्लावमुसनेनि
 गारं, दनदगिनिमूर्तिर्दुर्मर्दिता, गुह्यरागं ॥ नदनूयके, गुह्यरायावके, र्वक
 श्रयित्वा, त्रिगुलामुनिदिनानिष्ठाया, धन्यानासी ॥ ११ ॥ मद्रुत्तान, कलि
 सयासी, स्वप्नवसु, गुह्यराजयाद, मयस्वयम्, उच्चवसियादं, ग्वलूनवन

नियच्छुं वाटं अथं दत्त ॥ ॥ कासिका नहि तं ह म के लं द ल्या वृ गुं ग क ४।
 धामय द न्ध मूखाया विष्णु क र्प म् व क र्प ॥ २३ ॥ कासिका मथ्य लं याः
 कला काया वया वाचि वा लं न क म् व क या क या य ॥ ॥ द न द विष म् निद्रा
 बी ज ग म् व क र्प म् द ल न म य नि विष्णु क र्प म् व क र्प म् व क र्प म् व क र्प म्
 कं या जि तं डै ह न नु यं स म के न के वि मि हं रा मि हं द्वा व म न ॥ ७७ ॥ व स स
 या न स न न य क सिं या रु ल ग्म क या क या य लं क या य ॥ ॥ या नि क ला व न नि
 दी र्ध व ल्हा त म् या य व क र्प नि ग्म वी डं ॥ त ह व य किं हं क र्प म् व क र्प म् व क र्प म्

दा ३

अ नो डं ह त ४ य य न्ना त् ॥ २४ ॥ ख य लू या य या म नी का या व व ल्हा ड या
 नी न न या व नि रा त स या य ॥ ॥ विष्णु क र्प म् वि ज न व द ल सं न य य व
 वि स व य र्हे न म् यां य पा तं य दि त नु य र्प सिं ह्म तं नी म नि वी त व र्ज ॥ २४ ॥ क
 र्प सि का किं हं क र्प म् व क र्प म् व क र्प म् व क र्प म् व क र्प म् व क र्प म् व क र्प म्
 दि न स क ल्हा व लू य र्प र व क्का न व र्प म् व क र्प म् व क र्प म् व क र्प म्
 ह दा ध ल्हा ल्हा द ह ह ल ति मि व की थ न क वा य का य क र्प म् व क र्प म् व क र्प म्
 ह न लं स मि या क र्प नि रु ला ॥ ॥ विष्णु क र्प म् या सि क ता मु वी ह स स ता मि

यनिगुक्रयत्नातः यय्यागतं तत्सूक्तं पाके दम्बं नृकं खवहृकुलवर्षयकं
 ॥२८॥ सत्यं समर्कं कथितं जननी सिद्धान्त्रियं सांख्यलुधर्मि कानी ॥ नाधर्मि
 कं नागमसिद्धि रीतिं नस्ति नासत्यं वादं वदन्ति सिद्धा ॥२९॥ अस्त्यक्ताया
 मरुवत नृना वा नयू नृषया रुकामसिद्ध ॥ ३० ॥ ॥ सतं संमूर्च्छा जलन रु
 मयगुनः ॥ रुवे ॥ नृदी वलिय या ॥ वि य ॥ ल्मनि कानयन ॥ १०० ॥ यांग
 नी सैवे य ॥ यां कन कायां धनातल संस्का यलुख यगालि वन्मासाया निहन
 तां ॥ १-१ ॥ यंसु तीन तहा उ यां सर्थं काव वं सखू लाथ काव खू लानलं रुय ॥ ॥

गमलावनकं कं मनामवृत्ता लादसं नारि द्वयकिं लुजा सं ॥ हिं मूलजिं गीक
 त गमलिसार्थं गमू रुसिन्द नलि लादकू म् ॥ १-२ ॥ गमलावन कं कं म वृत्त
 हलति मि वकिं सिं यलासडा हिं गु ती र्यं लुलि गममति सिंद न गिलाद
 मम ॥ ॥ नृते सुसिक्तं नन गा मु यार्तं गममू रु म ॥ ध्रुवसू धन लल्लं ॥ सिक्तं
 सुनी लेन रुसि पुद ॥ ल स्य द्धम रुसाय न वा क दाह ॥ १-३ ॥ धन तावन या
 वसि जल रं दा सर्थं काव सा याम्बं द सर्थं काव वं सर्थं द तर्हि ग्व ध स खन
 लय नि गम उ वा क या य ॥ ॥ वही न ना ॥ वनि यक रु लानि लु रु रु ती यर

यागतः॥१०२॥ यद्वा न लय य तस्मान्न यद्वा लसुत्रं न ह ॥ ॥ गृहित्या
स्त्राय द्वा वामदक्षिण यागतः॥ उ य विच्छेद क का लु क न निर्मित्य याग
त ॥१०॥ कायावर्तसुत अवयव सयकै धनमिवास्वात् ॥ ॥ मनना
ज्जित न र सु विधिं पश्यति कु गतैः॥ व सि दाना द्विधनारु ग क्रीयाः तु वि
व द्वा ल ॥१०॥ ॥ द्वितीया द्वि क धन य र्था य र्थ व म ॥ ॥ द्वि
त न न्ना न य र्ग रु निः॥ सु कृष्ण ति सु ते स द्वा त ति का य ता । धन य ति स सा
स क्का क वि नि व वि गं ग ना व र्थ ॥१०२॥ नायू य स दा ह स या व र्थ स या य

॥ ॥ गृहितस्य मयू न स्यात् । गमस्य न क माय व ॥ स ता ल का नि न ल स्य य व्या
नि द ध न वि ना ॥१०३॥ ग्राह्या मा सुखा या मी वृ स या हि रु ति का या व स्तानः
स त ल म्प ला ग स स्तान क म ता स्यं वा नी वा ॥ ॥ गृहित नि र्वां ति वि ४ न न ह
नि मा ल न द र्थ न ॥ स क्का यि न न नि द्वा व य स्य नी न वि गृ हं सा का ॥१०४॥
ग्राह्या मा सुखा या हि रु ति का या व र्ध नि धन य वा ला व क स क न स न स म्प ला
ग स लु य गृ ह ल इ ला ॥ ॥ क्लिप्ता य र्ध क्का न ४ य स व र्ध स या र्थ य क न न
ग ता न म्प ग म्प द स ति स क स न द्वि यि न कं ॥ उ ल या न ती न न य ति क म था

म्यायवसग न जा जानोदि कारुसुनिसुवसंदिं युगुनिका ॥ ११८ ॥ यधुं गंता
गमं जया मूलं सानित विन कं ॥ ११९ ॥ नयार्क कल दृष्टा दीनं सुव नित्तादिनी ॥
१२० ॥ नागमज नीया हा क्कादवट कया हा नता सानक सानक दूद दू हा
य की व ॥ ॥ जवायय न ज ४ दू या ॥ सु न कं जायत दधि ४ तग नयः
य दू ॥ न त दू धा रु सु नू य तां ॥ १२१ ॥ जिह्वा स विं यति हस उम
नव ल्या द ल वं ठ ला व सिं य डी नि स म सा ग दा ख हा ग थ न न ध द कं ॥
॥ ॥ मद्र स धु स लि ता कं र संत का सु र्ग ना वि षा । स्का यि ता ही न ल य धा सु

नासीधु समा रु वत ॥ १२२ ॥ कयि लं सु न या रि नं द्वि फ दी नं य स न तां । दू ॥
न दी न ता द्यं द धि लं त लं न य ॥ १२३ ॥ म द न रु त थं स हा य थ दू द स हा सी थ
हा ॥ ॥ न दू लूं व दू धा रि नं म लि तं द धि सा व नं । जा य त व ति का व न्धं त
कं द धि क ना ल्य तं ॥ १२४ ॥ सि नि रु नि मू ख रु कं सु द व नं वि रि धा कि
लि त ग लि त मं गं दू लूं यी ला यि रि नं ॥ १२५ ॥ हा का वी न का या या ठ दू न या ठ
व ॥ ॥ उ द क व ति त दू लूं यी हा ना ना म वा यं कू नू त ॥ ह स स दू दू कू डे ना
क ना ति ॥ १२६ ॥ कू लू ला न मू या सि तं नि न ति ला सं ला य दू ग्मा नि ता न ल्य

लायतिमानिग्न स्रक्तला मादायत संयन ॥ २८ ॥ हाकृशिव उव वासयाच
 कावलायमसुधसिडानक डयादि काय ॥ ॥ तह स्रक्तमानियन नमयन
 जोदिवः नष्टि न नधनाधनि (मायन नमवाय (व्यदयां सुनिशौ (धौ ॥ ३० ॥
 डानसुखरव न थन न्रु नरु थ न्रु नन वातान नाहिसदिन (धं न्य ॥
 ॥ नद्वमुकंदलु म (ध गृहिला नायंयुविध्यदिय रुक्याम्वा द त्याहिसर्य
 सपथंहितस्य संसाधयदि दूरुसंमनस्त्री ॥ ३१ ॥ थडा पधी डांटाव संखस
 दूढाव चव्विजाययाय रिहायया दावकाय हांसाधनयाय ॥ ॥ कृष्णाकुश

कोलिकलिनाकिटि सिंदुदग्नि वृहिसिधायकू उ सिद्धिपन नद्यमः ॥ स
 यायसुधमिलितारिहृत्वायाग ननु कितरवति नाकि सुविदिशवदू ॥ ॥
 नीतरुति उ सिं हां उ सुकैनेवेने सिंदु थत यामि (ग उ काय अंगनवा
 लताक गकववदसूकू उवन उवशिखववतखव मि (ग लवात दि
 ववदू शला ॥ ॥ ननदीयसमूहुत तेलायांककू संकृतं ॥ अदधमंज
 नादव कूनरत वूनरं सदा ॥ ३२ ॥ मानसडाधूडा दान अंजनरु थनवाः
 सलुकविद्या ॥ ॥ जनायुजितमाऊलि रुतायां यनिवृत्तिं नं ॥ ३३ ॥

ASHA ARCHIVES

3418

रुवद्वि नं कृत्वा व कं दृष्ट्वा र वं लन ॥ १३३ ॥ नील रती या य का या व ग म क
 व व द स क कृ गि सा ह न गु ति का या दा व म र्थं स र्थं न ल क वि द्या ॥ ॥ वाग्दू
 निरुं द ति वि र्णं य नं स सा ना नि ना द र्घं । रु व द व दं स सा नि त नि वि क म
 रि म नि नं कृ त्वा ॥ १३४ ॥ व स द ल क षा य सि कं स ह म न न न धू यि तं आ व र ॥
 श्रु त्वा ना व द दृष्ट्वा र व ति म नू धा व गु ष ना रु स्या ॥ १३५ ॥ व र्ण ग न ह स या न तः
 का या व का य उ स न ल द्ध थ डी ष री म र्थं स र्थं का व ल क वि द्या ॥ ॥ १३६ ॥ न म
 ४ कृ ष्ण वि व का य व न व न र्ण द स्या ह ॥ धू य म नु ॥ ॥ स हि द व वि ता वि त क

धि नी सि र्वा त ४ कु म ना कु म ना य द न ॥ १३७ ॥ द ध र्ण र व स व न म क क ना रु न मा र्ग
 ग ना म क दा स म न ॥ ॥ को लु क य र्ण म ॥ ॥ ७ ॥ ०० ॥ का र्ण्य का मा गु या
 नि र्णं स ना रं य थि य लि कं । र व ना सा या हि म धा वी य दृष्ट्वा का र वि ल न ॥ १
 ३८ ॥ दि न क न स्त्रि धा ल वृ ती व न न र व ता न र्ण दी न इ सा हि ॥ ध नो र्ण थि क
 व र य म धू के ले ल य जा मा दि रि य दि वा ग न्ध रु ल न्द का व न वि न र्ण य गु
 का सा ध र्ण ॥ १३९ ॥ वा न क ०० वि मि ति सिं ग म कृ ल हा क जी ल द व दा न ॥
 ॥ ॥ वि र्ण र्ण ल क वि दी दा र व न य थ ग ४ क म का न्द थि क वि क वि द ह

४ पुनवपनविच्छेदज्ञानमा कुपिकवित ॥ १३१ ॥ तृतीयाविविधयथगमादः
 मिः ४ कुनिकविच्छेदश्चास्ति विच्छेदश्च नैसर्गिकताया ॥ १३२ ॥ अस्म
 दुनूलमिविविधगमाद्यं सम्बाधसद्धिर्नयं ॥ १३३ ॥ अत्र न न दह न समाधि
 लायान् यदकताद्यं त्वमर्तमर्ततन् ॥ १३४ ॥ याजि त्वापवर्तनमाह यागं य
 त्तागवित् ॥ १३५ ॥ सायकं कृमासाद्यसो गनं तर्हमीहते ॥ १३६ ॥ **तथा हि विद्या**
रुदः ॥ ॥ वायुयजुमनतनु समवाय उदाहृतः ॥ १३७ ॥ तस्मात्तु याज्ञेयं क्त्वा त्वा मूय
 तं कर्मवचनात् ॥ १३८ ॥ तायस्या कर्ष्यं नैयद्वि यतम् ॥ १३९ ॥ तद्वत्

३२

सा ५
 कर्ष्यं नैवाया कृयात्पूजकयागतः ॥ १४० ॥ यद्वत्तु कृद्वत्तु नीकाया यग
 ननर्जतं नैवा न च यन्मूर्द्धयर्थं न तद्वत्तु वीवर्तकं ॥ १४१ ॥ न च कपू
 र्कं जि त्वा वायुस्तिष्ठति कुरुकः ॥ १४२ ॥ या नवी दाऊ धनस्या दत्ता सक्रियत तथा ॥
 १४३ ॥ यां दीनां वसिष्ठानी ज्ञानी गुनू कुमागतं ॥ १४४ ॥ लिखितं सन्मा गग्या त्वा मू
 यत कर्मसमिहितं नैव ॥ १४५ ॥ मया या सधियां नाक्ता यागं गायलिमाः
 दयः ॥ १४६ ॥ तयि सा मुनय पूजा न यागः केर्विनायक ॥ १४७ ॥ ययुजा लि ४ य य
 पूजा सयय पूजा तं गुणा ॥ १४८ ॥ दूनसक्ता द्यादया गनं ॥ १४९ ॥ कलि वदय ॥ १५० ॥

३८॥ स्नानविहंसमाकायः यः कर्तुं यन्निति इति॥ सूर्यकक्षुवत्सायित्युक्तः
 कर्मसुतासुरं॥३८॥ यातुः कौलाद्यमृतमान्दविवायैः॥ सुखाविधि
 न्यवहृतिः॥ सूर्यसम्यक्कार्यः॥ नानाधसुदुर्लभं यन्निरुद्धं माहं कृत्वावयु
 ४॥ स्निग्धतनीयुति ॥ भूतनस्यवनायाति॥ उहनीयकवादिता॥३९॥
 दहविकिस्रावयार्थायाम॥७॥ ॥००॥ ॥ ॥ नायतुवायार्थादिनगुद
 तः सुदंगदकः॥ यन्नितानजीवति॥ नृवंतिनाजीवतिदृक्कनासो तथा नृथायानिय
 माहयं॥४०॥ यदिनागजदवाः॥ सुयदियुः॥ नग्निना॥ ॥ यदिनादीनम्कुनजी

वतिनियतिं तदादकः॥४१॥ यतवर्षकासुजदंगेउवथनतात्रुक्तनताहसा
 दिनखंकाससामम्याकः॥ ॥ यदिनाविसूक्तसुनानसः॥ यदिनानिगुहोदकनी
 सलिंगे॥ यदिनाविनयननृगीव॥ नियतं तदाजीवतिदककासो॥४२॥ म
 गंनकासनासिंगनाकयिनश्यामिखानमखंनयुक्तसुनमतायुथनंनरुलदाववा
 नदायामम्याकः॥ ॥ या॥ ॥ नृनसूक्तंनविदतासुनरु॥ या॥ नासिनाधिनसनाधि
 कनासवकाः॥ नासांगुलीदत्तयासुदुर्लभंयानिनका॥ मल्युवदनिहितयानखदकवा
 न॥४३॥ मिखाकासगलमनूददयसुक्तसु॥ द्यासुहोमवयुथनरुलदावमम्या

क॥ ॥ कासलस्यविषयं च संग्रहं प्रमिलित्वा तं माधवादि विषयं च तत्तु दक्षान
जीवेति ॥ १७७ ॥ कर्त्तृक नासां न कं च मूढौ ह्येव नाहिवृगुक्के ॥ नूतानः
वा दस्य माधवादि रूपा न न व उ या ता द न न सा ह्यु क्ता विषय विधू न ना ॥ १७८ ॥ क
समिखा स्वात् गत् द द य यं का नाहि थ न स य नि क्ता या नं दान विषय ता ग ल य स
य ॥ ॥ वा म ह सा द न ध्या ना ध्य न्दा म न य नि मू ता ॥ यत्न कं व तु ना मा सं ध्या त या
कु म स म्पु य ॥ १७९ ॥ ख व ला स व न्दां म न न य न त य वा नि मा स ध्या व ल य ॥ ॥ ये स
र्या ये दानि विधि रू न ता द या वि ष न य ॥ मा दो संपूर्ण च न्दु कि त ना य नि म कं ॥ १८०

८॥ संपूर्ण च न्दु म्पु न वा म व का ध्या व ल य थ ल न वि ष न नि रु या ॥ ॥ व द की
न व दं व ध्या द ला स नि य दं य न ॥ वा उ सा द नि म न्ता यं सि द्धि कु म स मा ग न ॥
१८१ ॥ व उ सिं का स वा द वा उ सा द नी म नु जा व य थ ल न सि द्धि ॥ ॥ म्पु द न
ह्य वि द्धानं सा गु कं य जा य कि हि ॥ ॥ थ म नु गु न उ व द स न स य द व ॥
॥ ॥ य सि नं स र व दं स न दा ला क स मा धि ना ॥ य न का म न सा स्र त्या द धिः
पा ता दि षं ह न न ॥ १८२ ॥ ॥ म्पु य स वि र व न दा ह स य सं डा थ य स स मा धि न सा या
व द न क न वै ये न व न्द स वा व वि ष ह न न या य ॥ ॥ नि गु ना गि नि कं लं कं न्दु स

नसासहासिकाशीरुला (६४) ताकांतिनवाववाममदितागन्धादिभिर्जिंशयुताः।
 नष्टासंवनयानैर्विषहनाबभ्रुमूनायातिना नामासुहिमनूजनीलेष्व
 हननंकीदत्यसोताकैवतः॥१५१॥ वृथंवाउसदवदियालयालुखताकैवथ
 नननसंयायत्वनथत्वनविषहननशया॥ ॥ कनंउगुणुनानिष्ठकीनक
 सनयानलाः। मंकाठवहनानोववीजनवांकदृष्टिकः॥१५२॥ कनंउगुणु
 हलथननिकदृ॥ ॥ नष्टयानांउनंलेयवर्हिन्नवाउयद्विषंशमायूनमऊ
 सितकासकूटमंदूकविहसमरागविष्टः॥ ॥ ६४ विलिफनकनननीकू

नर
 वूर्णसमाकर्षनिरुतलस्कं॥१५३॥ सूर्यादिवरुणादिनाजकतासननयि
 क्संमहिनाविनिष्ठातस्याः। स्यसंयवाधयनितल्लकाकालदष्टं नवाविलंघ
 सस्यकहनिपुयानि॥१५४॥ म्भसखा नवलथननानयाववीनकवीसाधनया
 यः॥ ॥ रुतसुवनिस्त्रीनरुतलस्कविनीर्णयत्तनसविलिफया॥ ६४
 धृतातगुमस्ताः। हनतिविषमसवम्याधयत्कालदष्टं गमयतिवननीर्थ
 यादूकानपुयिष्टा॥१५५॥ वीयास्त्रीनवंसननयंमाकसेनेनककावाकाया
 वथनविषहननयाय॥ ॥ नडंउनाजीयनिसंघनादातइलिरिर्निवि

षडनन॥ ॥ यव्यः कृच्छ्रं नृणां साधितं, यव्यं वव्यं विविक्तं यत् ॥ १७८ ॥ वंसन
 न (जानासु, तूनामन्दिन (साधिका॥ ॥ १७९ ॥ निम्बडाधनडाकलीनवासन
 कल्लंनकथनं न, साकायाकानमठंठनिखिविमावथनयाविरमद॥ ॥
 नित्यकानिनिर्मका, यतं यकायनानिता॥ १८० ॥ श्रीयावनडा४ कीर्त्तन
 विक्वर्त्तनिरुक्तिता॥ ॥ १८१ ॥ विखल्लमनालेतेयकंथकाकायवधल्लखं
 दावगिकदडाकांदावनकविषडनन॥ ॥ १८२ ॥ समयजनसायतं, तव्वल्लम्व
 माकुञ्जायायानासा रूतसामाहं, यीजंजयतिदानुलं॥ ॥ १८३ ॥ दाधसयान

सकर्षकृष्णसुनकविषडनन॥ ॥ निहन्तिनिखिवृजया, धूयासताविसर्ष
 लं॥ किटिधूयामार्ग, मूलंरुन्ध्रिकडंविष॥ ॥ १८४ ॥ मसखावीतिधूयकादवि
 षडनन॥ ॥ १८५ ॥ न्यामार्गधूयनविक्वविषमद॥ ॥ ॥ हंजीयपूषिगतायन, जुली
 तुसूनसाम्बना॥ ॥ १८६ ॥ जाकिलीविषरुतादी, यीजनस्यजयद्वर्व॥ ॥ १८७ ॥ यकाज
 टजुलीसनसलंखनयकसिनीयंधलय॥ ॥ ॥ ॥ तुंसर्षकूलायसाहावीडवा
 नलय॥ ॥ ॥ कृदायायनरुनि (सायदरुनादायीउमनानादना, निर्गुलीदस
 निषयउजउनादानंयदं॥ ॥ १८८ ॥ काष्ठाकाषलविष्णुनागनतुसाम्बयूक

वानां वन गुण्यं संलसना मता गदमयी स्यर्धद्वि यं मूर्ति ॥ १०२ ॥ कूष्मा
 ली उवाच विष्णु दंष्ट्रा स वा द्विषं ह न नृ ॥ की नै कू सिक मूलं क ह य क न वा
 ध्रुवं ॥ १०० ॥ पठ स्यात्तं दू गुरु न वी न का या वा स स वा स्यं वि षं ह न न ॥ ॥ वा ज
 क्क न्द व त्त्वे वा जि या ग मूर्ति उ ॥ अ वा वि ला जे द्वि वा . स्व द्वि द द्द स क य ध्रु गु न
 क ल्या न रा जे नि सा ॥ सु का र्थे न स न न क स्य च ग ति ह्वा या वृ ॥ १०१ ॥ सर्व दा ॥ य र्था
 र्थे न न न र्ति न व क थि ना का स्य न सर्व दा ॥ १०१ ॥ **विष व र्था या न व म ॥**
 ॥ ७ ॥ ॥ ॥ प्रा नः स्या य वा दी उ म न वि न वि न दि ना वृ क्क च र्था ग य का

यः कू र्था स्मा सम कं नि व ण सि स व यं कू ली का र्थे द धा या ॥ द म्भा ह मा नि से
 सु स व न म यि त ना या उ य स्या न का र्थे दो . य वा म्नी की व नृ ली स न य नि स ह सा व
 ध र्मी ता न व र्थ ॥ १०२ ॥ ॥ नि त्य स्ना न या य वा उ ता र्थ तां य म न व . वृ क्क च र्था ध
 स स य मा स थ न व कान द स क्की सा ध न या य थ न न व णी क न ण सि द्वि ॥ ॥
 य दा उ क्का दि ना थ स स द्वा गि ल न म ना न ॥ न दा द लु न स ना ता . कू या लु क्की वि
 र दि तो ॥ १०३ ॥ य य म न म यो न . क्की दे ष्ठी र स्मी क नो य थ क्क . क्का वि नो ह
 न ना ना नी . क मा दा या नि या नि व ॥ १०४ ॥ य म सा ध न या य ना क्की या नां य न

षयानां नामानां लूनं चायावमस क्वायाव वल्लवनाथ वंधरुया ॥ ८ ॥ च वा काः
 वालिकाया (ग) गच्छ नम नूग कृतिः ॥ मुया यून वषा वस्यं क्रियते दासवत्सदा
 ॥ ८९ ॥ असा धनका वालिकाया गधाय मीनसा धनया तसा यून वषा कर्ष
 नयाय यून वषनया तसा मीन कर्ष नयाय ॥ ९० ॥ अहमय वालिका न कोलिक
 मूनिमदिन उर्कल लाय नवनीतं समलमिलिष्ट विविना प्रवाधय दात्री ॥ ९१ ॥
 हृद्रे उ वा वासमैया क्वाय ग्रीमन वासका ॥ द्रूम ससवनी न वासनया यस्मसा
 नसवानससा धयाय ॥ ९२ ॥ अत न विरुतवर्हि कमलनका हृत्क वषसुदृढ

स्वा ७

यक्ष कवासकयाग ल कूलमयवा नर्त क नूत ॥ ९३ ॥ अत नू क कवासन
 ता उदयक नका यल या कान वय वक्ष्या ससु रु नू न ॥ ९४ ॥ कश्चादि मू (नू) व
 र्ण सम वल्ल (गो) ४ यय सुत जातं भत नवनीता न्या ग्वर्हि विवाधा नुदष्टिवस्यं
 ॥ ९५ ॥ हा क वीया मां उरु नया का कली साया ददडा न हि रिया तवनी का
 या वमी सवाल ॥ ९६ ॥ का का स ४ यदृष्ट लू तुंद कूरु जानी वत सुतु रि ४ य
 तु नदिन निजीय समय ही मा ट कान उर्वी ४ दस्वार्त क न कान न नल नलः
 वन कला लय पक्षि न गृके यू के रं न न का मि नी व स क न प्रया य या नादि

शि ॥ १८८ ॥ संकाशवामां उ कृष्णरुत यूषा लाकू कूं हाकू कान वी दा व पा
वर्त का स र्थं दा व र स र्थं दा व यं म स न वा ला व न क स म स कामी नी स र्थ
नं व स र्थं ॥ ॥ वी उ कृष्ण स व न्नि उ वि नि दि न्त उ ता ह य यूषा उ वि जा न सं
रु न क वि ग द्वा स क लं वि द्वा न नू द र्श ना न् ॥ न कृ त्वा क वि ला य न न स म स
द ला हि ता सं य नं वि द्वा व द्वा म न न्दि न न म न सा कू र्वा न या ना दि शि ॥ १
८९ ॥ हा कू दू ध त या यू स ला व स स ला व न य या व कृष्ण उ न यू क ला कू कूं
वि व र्त्त क ला स र्थं ॥ उ या ला व क वी त सा या द स न वा ला व यं म स न वा :

ला व न क स म स व स या य नि द्वा य र्थं ॥ ॥ १९० गार्क की न स र्थं नि वि दि
क क न या र्ध नि ॥ ॥ १९१ ला व र्त्त क नि का मि न्ना म द ला म द ला ल ॥ १९० ॥ १९१
मूर्क या द दू डा क्का स्वा या द दू डा वा ला व ला स न ला व ला न ला थ य कामिनी
मा ह या य ॥ ॥ १९२ ला उ उ न व र्त्त क नि सा म ध न सा न स वि द्वा ॥ क न्द क
या क न स प दि ग ल ति व न का मि नी म टि टि ॥ १९३ ॥ म हा वी म व ती त गु क न
जा ह य म मा स यूषा न स वि द्वा ॥ या नि त स ल य वि दि ना क र्वा नि म दा कू ला
ना नी ॥ १९४ ॥ म स ध सी या ल व नी क न वी न स्या न न या व सी ॥ या द ला स न स

सि ५
 विष्णु (जो) दा यं यं दत्तं यं ॥ १८५ ॥ धमन्तु नक्र सङ्गं जाययाय कुवन्तु सं
 जवन्तु सवन्तु यन्तु वाव कामिनी वसन्तु या ॥ ॥ इत्युदं गभन पूर्यो यन्त्रिणा
 यं जमन्तु नश पीतसा नाम्ना (धो) न पा दो ला कुदि वरुं ना ॥ १८६ ॥ कृष्णि
 पुनरु मा डो न कटिस्तु न तथा वा ॥ गय न य य सा पीत न ग र्त्त न धन य
 ॥ १८७ ॥ महि बा द युगुली लुं दूध स्यायू सा दू दू डा ता दा व द्यत सम द थि व
 ॥ ॥ ज्ञा बा न क कु क्ली लु व वि य कं पि सा व न नू न लं ॥ या द त स स य वि धि
 ना वी र्ज सं रं कु वं कु नू न ॥ १८८ ॥ स्व त स क वृ ह स्म या दा व ह स थ न य या सान

बालावदला सनल वी र्ज सं र न या या ॥ ॥ कृष्णा गु न द दि लं डु र्त्तिका पूर्ण
 तिमी नालि सि ना ॥ वी र्ज सं रं कु वं कु नू न वटिं व द्वा क न्य का स्तु ॥ १८९ ॥ नी
 सुव र्ज र ती या ज व ल स ल का या व कृष्ण स कान का य द समा उ व स्यं जां द त स्यं वी
 र्ज सं र न ॥ ॥ रू रू क लिंग ना दी क र्त्ता सि न न न नु व द्वा ॥ ध रू वी र्ज सं रं
 कृ र्त्ता या व स्ति न ता न ॥ १९० ॥ वं स या ली ग मृ क्क क या स न रू दा व कान डी स व
 स्यं वी र्ज सं र न ॥ ॥ व दू नू य य कृ य नि ता य न न स रू रू ल मू डि क का नि दि ता ॥
 वाम न क नी य स्यं स्यं क ना ति म दां कृ सं स वं ॥ या व स क रू यि व ता रि य मं डी

नाश्रुलाजीययसा वरातः। सुकारुम कंकिययास्ति नासो, सानाविनतास्ति
 विना वसीत्या न॥२०॥ रुद्र कर्तु धया डा व धी कौया वै हा का या व जीन व द
 ह्दं न सुं लिं ग द ध श ला॥ ॥ माख कूलं थ उ वा नाम्नी, जां डि कू लं डि न ल
 ला की नैः। व का व त ह म ना उ य नि मा सं दू धं उ क्ता॥२०॥ माख कूलं त ह्नी
 पू वा क दू द न क्ता कौ व य ल सु क्ता ला व न के व शी या य॥ ॥ सु न त न ग न याने
 व, सु नो नाम लं कू कं॥ त्रु डि आ उ ना द व, व नि तं सुं ह य वि नं॥ ॥ सु म या दा
 व व वां ग शि वा या ला म का या व स थ धै न मा द न त य थं जां ट त य वी र्जं सुं ह

हि
म

न॥ ॥ नि र्वास्ति कट की न रु, ना स म ल मू र व स्ति तः। ख र्श नी व न नं वा
 दो र व दू सुं ला शि जा य न॥२०॥ के न की नि र्वा स न रु सु ध न ल यं र व दू व ज
 पू न या य॥ ॥ ने का ल म न म्भ त न, के न मू क नि ष क त मि धाः। कू न त ला हं म
 लो नि वं ग मं ग न्नि तं सु ह सा॥२०॥ सुं ह न व यो या गु या द न॥ ॥ व क वि ष
 ह ला य तं, सु नु या न ट टं ग लो॥ ति क सिं ग न म न्द्रा सां, क ना ति म द वाः
 हि नी॥२०॥ लं तु ल सी, क यू ल, या ध ल, ट व स र वा ल, थ न न लिं ग स ल य
 लं यं लं ग न या य मु या स र व क्ता य म जी व॥ ॥ व न्द न व नु क ना न स लं जे॥

सिका

वर्णसूयर्णमूनीसनताये ४। को डयूनेवनिं व नाम स्त्री द दयानिविदा नय
तीरु ॥२०॥ कयूसु श्रीरवन्द पिंयसी कसि थन नथ वलिंग सन स यानि
डावन ॥ ॥ नन्द रुवा र्का कू ज तं रि संगु रे ब्रजी मधु एय सिका सुते कता
४। यानी पुनि छावल नायता गुठी कूर्वा न यौ ना नीमि कलां कलं कि ली ॥२०॥
कयूसु रंता निगखा सुदू कसिन वास यानी सस व सस य यानि डावन ४॥
॥ ॥ सम्या कं डयनि न टि पुसव न्धना नं न गुह न न सुन न सति सन या गभ न
४। स्या य स गतिक नहि तं त दं स त नाहन नय व ती ल्य व न ल जाती ॥

॥२१॥ श्रुत्वा नं मन्मथ कानं नति स्त्रि हि वं मदात्कटं ४। ध्यात्वा सम्यक् कुवं य
प्रीत विक्कु विं पन या वितां ॥२१॥ अ व स नी न काम द व ध्या व स या व श्र क र्थ
न या य ॥ ॥ द वी स पु ल वा मि ह वि क न ती सा धा हि ध ना नि ता सा यं द सा ह म
व वि धि ना ड द्या सु दू मुं त था ४। जा या न द ल या ड ना न न ग न तां कू र्पा दि कः
विं मि य ४॥२१॥ कू ॥ थ म नु न द स स्त्री धा डि म दा र्कू जा य या य ४॥ डि या ड
न ना ना नी श्र क ज र्थ न या य ४॥ ॥ ग स ह न व नि का ल य लु व्या म न
व हि कां ॥ य ल्वि मा रि मू र्वा तु ल्या वि ड न ता म व क र्थ य न् ॥२१॥ थ म नु न

य. यति दिन वलि दोने धूय यो समर्थ शक्ति नति नतिला वासिद्धिया (ग
 गृहिता कनति सकत मूलु को रतीं सकु नाम्नीं ॥ २१॥ थर समन सकु या
 लूथ या वध व कृत्वा वसिं का सुधं काव यति दिन वलि विय सकु मानन या
 या ॥ ॥ पूषा क सुव कु दृष्ट्यां दग्ध यत मूर्खी खठिं । कनं कनाति सुयन स
 यन यन वं नयत् ॥ २१॥ गुं र ग व न नू डा य न दू न व म्मा द ता य मू का दृ द्वा सा
 य वि क न वि नू यिन व ध व ध मू कं क न न ग द्वा ग द्वा स्था ला ॥ व सी विय म
 नु ॥ कन य म्मा य ॥ ॥ जि वा लू क य स ग कि ज जा न स्तां हा व द न नां ॥ व र गु

गुं सुध यन स्वास्तीं क वां य जा यत ॥ २१॥ दू उ उ सी थ ला का या व धू यन सुं
 रु न या य ध न डा गु गुं ल डा धू यन सु सु या य ॥ ॥ गु गुं नू क व उ ना यां मन म
 स्व हा वा न नं ॥ कनाति धू यन ॥ सा रं हा किं न (धन (ग व न ॥ २२॥ ग क व व
 द न कू नू कू म द या दा क का या व गु गुं न डा धू य या दा न मू व न न या य सा य स
 को स सु थं दान व न न या य ॥ ॥ क स न व सि वि द्वा क म स रू म य म्मां ग व लू
 वि क या नू ॥ सि न सि नि या नू मा दा र व नि न गु दा र व द्या व न ॥ २२॥ जा न वू उ
 रू नि मा सु र वा या लू (ग उ का या व न कू मा उ स न स द्वा य वा य क सां र वा स्यं स

ॐ ह्रीं ॥ सा रु न य र्या य ॥ ॥ वृत्ति क स नी न दू र्द क ना ति धू य न स क स मा
 रु नं ॥ अ नि न य ति ग य स र्थि न स धू य न ॥ २२२ ॥ वि दू या स नी न धू य स र्थि मा
 रु र्या ॥ अ य स क्रा स स थ दान स क रु र्या ॥ ॥ वि ल न कं या ति दू र्द न नी धू
 य न मा रु य न ॥ क नू न नि वा न ग र्द न रु व नि स र्थि द या या व न ॥ २२३ ॥ का स थ
 उ वा स धू य ल यं व र्दि पी ल म या क स र्ज ल ल द व व न न या ॥ ॥ स र्थि वि षां म
 त मा नू य की क स थ स क द य नि ग र्द द ह सि का न ल क्ति न ॥ म र्थि ॥ स थ नि
 म त का व व न स र्ज ल आ या नि या व द द या व र्ज मे या दा ॥ २२४ ॥ वी न द स र्थि

सि कामानुसूयामिकाया कसकि सी द्वय कावखा उ काससा दा ववच्छि वंङ्क उ
वयू ॥ ॥ कृष्ण य तति (ये) धनासु जां नंदि नयायागि ली पंचता. याका त हव रुति
सहिता कास्ति वृक्षान्तिता ॥ संमिभु कृष्णानु न जसा रुत सयमन्तिता. कीर्त्तु दा
मिनीयाः कनातिमहती निडा न्मनामा रुनी ॥ २२ ज ॥ गकववद न कृद्दं सिकाया
गि ली मयिया न लूकाया व सुखा सहसु न मूव त न रुया ॥ ॥ ७ त न म नु न विमा
रुनीया. याग म यामी सी मनु नीया ॥ यत्त कसः सफ कसफ वानान्. याय्य
निर्गकिं यन माहि नीत ॥ २२ ७ ॥ ॐ नम नू डा य नम नू दु का ह्या य नी दू र्ज द

विदुर्गन्मि यानिड निड निड निडा ययनिडा यय कुन कुन नूड नूड यय
 निस्त्रा हा ॥ ॥ ल नर्द रस्य यक्षं गं वात लंग विधानिर्न ॥ क क्वा हि सानि ता य
 कै ध या व स ह नं न ल ॥ २२० ॥ मा ह य यो य ॥ ॥ ये ह्या व सि र्द नि का यो
 मूख पट ल व ता नि नी ति ल य को ॥ सु न मा न ता नि र्न या र व नी नि हि न या
 न न वा क न रा स्ति नं ध सं स्त्र य व्या ल्क यो स म ल्क का य स्य हा या न स नि र्वा
 ता स न त व ल्क र व ल्क स्य ॥ २२१ ॥ डा न या क स द दि या था स म उं या स्या न यि व स
 त स्य सु न न वं ध या य ॥ ॥ ग न्ध य नी व य नि का स हि नी तं मे स क क जी ॥ म सि

गि जी ३

॥ २३० ॥ ५

नाम्न न सा ग न्धं हा या ध स्ता न्य क् वि न ॥ २२२ ॥ गं उ म स या र वी क उ न गं उ
 वि ड का य सि र्द त ल स त य ॥ क न ना नि का न ॥ ॥ ध ४ ध ४ ध ४ ध मा य नि स्त्रा हा ॥
 स्व धि न्द्र स हि तं व हि र्मं स सा न वा लं गं ठ द व स द्म नि ॥ यि र्द व सि र्द क
 यो स ना रि नु उ य न वि द्ध व य नि स का हा ल्क म ल मि सून स द्द ॥ थ म नु
 न म सा न स व नं यं थ स जा प या य नो नो य नं डो वि षू डो ल द्की अं डो वा य ॥
 न का मि न्द्र स मा ध य मा य वा सी दि ग म्भ न ॥ स य्या ध नि व न लु थ वि द्ध वं
 क नू न नि या ॥ २३१ ॥ क्वा दू व नू न हा का या व उ य वा स या दा व सि र्द का व

नतस्यंविद्वद्यथाय॥ ॥विद्वत्स्वयंयथाय॥ ॥यताम्वनसुखियतायकाना.ना
मान्तावर्हिहताशनन॥संतिरथाकाकोसिनाविवद्व॥यथावतनंसुखक
सुखकयति॥२३२॥सिकशयाकायउकायावम्समवियाकाग्वसकायाव
नामवाय.संकरयाम्वंतुसुवयाववायकंहाकुउच्चातनयाय॥ ॥ककीयि
हससिकन.याधनासाहर्षिकना॥द्वानाधनिहतादंती.समन्तावृटकानि
का॥२३३॥मासखायाहिहृतीकायावजनकीलीदयकावतसुखाकासनाय॥
उच्चातनयाय॥ ॥कुंदंतीदंतीमहातंती.वृद्धातंतीनमामुन॥कीलीतायम

कु॥ ॥ ॥सद्धानपवतानसम्बुविनटीवातिरथान्ताम्वन.यतांगनककाक
विद्वदनकनकीनेनियाम.धन॥संरुविन्दयतां.सुखियवतनेनावृष्ट
कलागुती.नवद्वानवकठारुवेष्टरुत॥सु.धनद्वाननं॥२३४॥सिकाश
याकायाउसुखद्वानवायावसुसानयाका.गलकाखरवीश्रुर्कददडावाता
वनामवायावसंकाखयाययनीसुवयाववायक.उच्चातनयाय॥ ॥उच्चाट
नयथाय॥ ॥ ॥वासयवाले.धर्वाल.श्रुद्याननारिमनितं॥श्रुष्टाहनसह
श्रु.सर्वनदीकनंवनं॥२३५॥ध्याकधनयावश्रुद्यानमनुनजाययादा

वदलकी वाशा फूँ वासासुवसं सर्व नकाशय ॥ ॥ नात पुत्रं लिंगिना विद्या
 विद्युत कुवनयं यं मनु दयापिदृष्ट ना निवर्त न यसाधकं ॥ २३७ ॥ वृक्ष
 नदीहीरुसपुष्पवृक्षे नासिफ गभुस्य ननस्य दूनात ॥ भ्रातृ यगन्मद्विन
 दामदाऽन्म गवर्तं लुक् लुक् रानिऽलययेव ॥ २३८ ॥ विष्णु यो दानन साया सडा
 नसनी नरुत् कीसी न दायमरु ॥ ॥ पतासनाई दलमिनु सर्वगन्ध साद्या
 यद्या समुदकं तु न गस्य ऊनिऽ यदात्यसिन्धु सतिसेऽन्मूखानि नखां तिका
 निवत्तहि मव किं लिखे न्नया वतु ॥ २३९ ॥ उन्म निमहा नानय सव नस्य महाय

नरु नाना नका चका च उट्टिं हिं सिनी मंदि निन्नदयिहि मीन वद भ्राः
 दसी कमसि ति यत्तहि डाक्कि न मूगु न हिं मा लुसम लु यदान हल हल
 मानमान मरु रैन वयानय सन हं हं ॥ यमनु न जाययाय धूया हय मूमा
 लु ॥ ॥ भूखी सफ व पा के न्महा वायु निवान नं ॥ व दमाने नमनुः
 न नत्ये वान्या निवानु नं ॥ २४० ॥ मूहता मजी दवान न्दधन धन नक्क
 नक्क सु भ्रा सिनी वृ वी वा निमा नव दसिनी धन नीत स हं हं ॥ दाकिनी
 वाननमनु ॥ ननु सो दसु नं यथा दाना दसु हि डाकिनी कटि कुं

लांगलीमूलं द्वाघीनं विनिवान यत् ॥ दद कासुया हाउं स्यास्यं अकिनी
 हनन ॥ ... ॥ यासाद जात नीम्व स्य यत् वेनिक कामया ॥ दानसं मुखनिदि
 फ मयक्त तत्क मग ॥ २५० ॥ निम्वसि दूधं दनयाति रंसमद ॥ ॐ ॥
 ॐ सवनयादू कल्यानम ॥ ... ॥ तउ हंसम्यय जी संनरु द्धं क सुन व स म्कात्र
 लुकलुगहि मं सिनि सिद्धि वनं नमह ॥ ... ॥ श्री सा नमी दसं ध्या त्या नामाः
 श्री नने पूर्व के ॥ गह ग सुस्य दत्त ॥ ॐ वमव विविने य ॥ २५१ ॥ यमने
 नजाय याद गहन न जानमह ॥ ... ॥ निम्वस्य नम मानरु सुन ल द्धं क ना

दसां च काहिक क ना दीनां भा दमं क यत् तं दनात् ॥ २५२ ॥ निम्व नव
 क ना द सद क थ संख स वा च क सुहन दू लायं मद ॥ ... ॥ काहिको दि दानं
 हनि ख द्ध स्या स्ति ग सस्ति मं ॥ सुसा नद ग्नि धं ताम्भ सं निरवा हं सट्ट
 र्ग नं ॥ २५३ ॥ दूर्लभ सि क म्य न्न म क्क ना दू क्क ल कि वी जा दं ॥ म्भ दू क्क म्
 काय मं काहिको दि क्क त दानं हनि ॥ २५४ ॥ म्भ दू क्क म्भ स स सुकि वी द
 धा व स र्प विख म द्ध न ना स ॥ ... ॥ साध्या सि क द्ध द व क्क सुकी न का दी व ल्भु दि
 सं दू का ॥ व स्या दि सिद्धि निव हं क ना ति निय तं न सं द ह ॥ २५५ ॥ हिं स नि वा

नतयय्याय ॥ ॥ ॥ ॥ कृष्ण कृष्णं चतुर्दश्यां न तदग्रस्य दक्षिणे ॥ निर्वो
 यरुननकन गृहि त्वांगन कंत त ॥ २५ ॥ गकववदसक दं सिक्कमवि
 याक्का ॥ गतनां अवधिनं कायावधं उयाहीनवास ॥ ॥ दहत्केनालुनायव
 दह सदाशिमन्त्रितं ॥ शिरस्यत नस्याख्या पक्ष्म त्वं यात्वे सीनन ॥ २६ ॥ यनयौ
 गौग्वनयानामभुजवसुवाह्यं मीसुक्का संकावडा याम्बुनित्यय रुया ॥ ॥
 वनित्तिं कंद को गलरा कायपक्ष्म गुली काविषासु संति को ॥ निवृत्ता मां क
 दा नाथ ॥ कावनीम्य कूर्वीत ॥ २७ ॥ यतीसिकाया अवदं दी दं त्रै गुली वसुडा

वैद ५

हिडा नवासुथ सुकृया कृत्वा सुगाह्यं मत्त ॥ ॥ सवांगसं सार्गिक नासु वकं
 पद लूदन्दं द्विख उंग के मसे ॥ विरिद्य संकायक कनू केनः नानावधाम्
 दनना कृ संनिधा ॥ २८ ॥ मस्यारवा सस सुकृया मसु बीया सविहीत यवं
 सुथस्यं तय नानावधाम् दाय ॥ ॥ कृष्णालु सुकृमा दाय नर्त्तनां सोम्यगमि
 नीं ॥ भूतया सपनात्तु द्वि कल वंद नि यालु नं ॥ २९ ॥ रुटस्यारयंदं
 दं या वा कायावमां उ सतं सन सी हायक ॥ ॥ संवाद्य कृ ४ कृन्द जीमां स्या रा
 गं ॥ द्विधायक त्वा पवि ॥ ३० ॥ यवहं ॥ नामा सुन स्या वदतं ॥ का सं कूर्वीत

॥ २५१ ॥ कृष्णदत्तवर्मा पुराण ॥ २५१ ॥ कृष्णदत्तवर्मा पुराण ॥ २५१ ॥
वृत्तनहास्यं कृष्णदत्तवर्मा ॥ २५१ ॥ दिगम्बरनवनां गणक वासवश्च नवभुज
४। मत्स्य जालेन वधति दंष्ट्रा जालमिव ध्रुवं ॥ २५२ ॥ यै विठ्ठि आवमि साया स्वा
संनयं स्यात्तव तव दावय मरु वा काया दवनं न्य ॥ ॥ नञक स्य ग्नि संया
गम स्तद स्का सी नी य र्धना ग ४। आनधर्क संदूना न ह्य क स स संव नं ॥ २५
३ ॥ सम स्य सी म स क्का स्यं य त सी सी न व सु या व क मरु ॥ ॥ वा क स्का ने क
सा ला नां सा या रा ज न सं द ति । वृ ति के नं उ वी ऊ न सं य द ग्नि या ज न

॥ २५४ ॥ कनं उ वी ऊ म स क्का स द स्यं कं काल रं दा क्का क ॥ ॥ गृ ह ध
म स्य ता ना वा किं ध रिव क स गं ध के ४। म न्द ह न स्य या जे सी स त्था ने ता
स्य सूनं ॥ २५५ ॥ गं ध के डा य ट हा स द स्यं म स क्का स्यं थं म सा क ॥
॥ ॥ की क सं क ष्ण सा न स्य नि वा रं ग म ष म ध र ४। दा ष्च न द क रं ग म
व सं तु रं अ य य ति ता ॥ २५६ ॥ काल सा या क स ग्ग थ स थं ढ न सा म स या
द द म दा ॥ ॥ मिं निं स्य वे सं र व व उ र्द ग त्या वि रि द्य न तु य ति मा मि
ति र य ४। उ क्ता स्य सं न के ज स न ति स्त्वा न सा न ना जी के के दू र य न ॥ २५७

॥ सवलिंम हतांतां वृजां कि यत यतु संरूया ॥ सद्य य जा यत त ह्य नि
या स ना य व द ना ॥ २५० ॥ प्रति दिन सा ख न त ४ प्रति ८५५ वं वृजति नि या
न स सा खि त मा न्तां ॥ प्रभा व सु कि का ना जी ॥ ति नी य द्या व ग ५५ ने ॥ २५
२ ॥ जा य व मि सा या ही न क क वा ॥ जी सा र सिं ॥ ति क दू लं रा थ न स क
या ना ग या य ॥ ॥ उ य द न् सं र व क्क हा ॥ वृत्ती जी को य स प ना त ॥ क ना द या
पि य या ग ॥ सा क ने य म न्य सा न य ॥ २५० ॥ भ्रा वा र्य वे द्य क वि शी ना ज स रा
यां ८५५ धि ता क्त्वा त् ॥ भू व नी दं न व का र्य स न् स य जा सं स ध य हि ॥ २५१ ॥

मा ३
मृत्मानि रश्मि जनन्या विधिवत्कृत्वा यदगत कतिरिति ॥ यागस्य द्वा रव्याम्
पूतकमा लाकृ ने वकन नीया ॥ २५२ ॥ जी द व या ल न व त ॥ या ता मा ल्य सु स्यः
कति नियं ॥ मृ द्या प सित नो वा वा र्य द मा गु फ स्य ति ॥ २५३ ॥ वृ ति जी व या
ग वृ त्त म नी सु मा य ॥
॥ ॐ ॥ ॥ ॐ ॥ ॥ ॐ ॥
जी ३ गु नू मृ ति र्य य ति ॥ ॥ मृ थ पु सं ग ना व द्वा व नी के न न मू ह मं ॥ स्वा मी प
नू व त थ ॥ धि रु मा रु ध्य सानू जा ॥ ॥ डा व धी म नु व लि ना ॥ हा म क र्म न कः
मं ना ॥ ॥ ना द या म मं हा क र्म व सी क र्मा च ना म्य नं ॥ २ ॥ सु व र्ण धू र न व

जि. चटकादनयुनिगं ४। विनायां च निखं न न. क. क. उतदिननि सा ॥ ३ ॥ सना
 वसुपुतं क. ला. क. न्याह न न वे व य त ४। मास म कं निखं न न. द दं निखां वलिं
 विं धिं ४॥ नकाद न न क. प. यं. वलिद द्यादि च क. न ४। मनु नान न न दों यं नि सा यां
 रं. चाम्. (गु. न्मू. क. व. सं. प्र. सी. द. ग. क. ग. क. ला. हा ॥ निख न मा व धी चि लां. क. उ. द.
 या सु था व लि ४। त. उ. उ. यं. तु. दा. त. यं. जा. व. ल. क. व. द. द. सी ॥ न. त. क. व. दि. ना. न. रं. न. त.
 क. व. नि. सा. न. क. क. ४। त. उ. व. वं. म. क. ला. र. ली. क. ला. म. हा. व. धां ॥ नि. उ. वी. उ. न. सं. यू. कं.
 ला. य. वा. न. प्र. दा. य. य. त. ॥ द. व. व. न. म. नु. ना. रं. न. स. क. वा. नं. प्र. उ. य. त. ॥ मा. तु. लं. ग. र. सं. ग.

क. सेंध व न तु पु न य त् । प टं ग कि न ना सा य र्त्न क ला वि च क न ४॥ वा न वा न प्र दा त यं.
 व सी क न न मू ह मं । व र्त्त व त् म नु सं या य दा सी य डु म न स दा ॥ उ द न कि मि सं ग क ला व र्त्ति यि ला तु
 मा न वं । व र्त्न क ला प्र य त् न दा त यं व स मू ह मं ॥ म नु ना न न क क यं ना म मू य र्त्ति य त न ४। स फा रं
 व स मा यां नि न म न किं क न व स ४॥ क्री न्मू कौ व स मा न य ला हा ॥ मे ध नं उ मा ना य को गं उ द न
 कृ प्ये व वा की व न्मू क मा ला कृ. जा न य न सं य तं ॥ सं य र्त्न क्री य त म नु दा त यं र ला स व
 न व र्त्त म नु न सं कृ ला य द ति व ति ना द ति ॥ द र्वा स र म म सी व न स सिं व य र्त्त य ४। रु स व य
 वृ ता म्ब ल र क ला व म्ब मा दि वृ ॥ व र्त्त म नु न क क यं स फ वा नं वि ला व न ४। मा ता वि ता त था ला

मि.वसमायानि.सत्यन॥अनामिकातथात्रकं.सुपंचमसुपंचकं।षातयानयदानयं.नानीवस
महाहमं॥ ॥अ.धायाननवकं.सुरुमाननमहमं॥वुंक्रदंष्ट्रमसानी.सुपयसिंगदकिन
॥कवृन्.नदिनकला.संयुक्तमतिमानन॥सुरुदाननिखनन.प्रियनसुरुनिखितं
॥उरुकपकसंरुकं.निंवयुंतत्येवचममर्कनत्युनामानि.कूर्कनसुहिनायथा॥नुता
निसुरुखन.उयलं.मययलथा॥उकाशनदिषंसर्वं.मननंवनसंसय॥ध्रंकिनाविसं
गक्र.निम्वकैषवृद्धिमातृ॥लोमकवृत्तथा.न.विता.लोदाययसति॥सुरुसमयिसंयु
क.विकीर्यसुरुवसनि॥रा.कुवाटनंरवद्विषं.प्रियनसर्वसुकति॥मनुनाननरुफ

यं.सुरुनामसमूचनं।मृष्टतनसतंकला.विक्रयजगुतगुवा॥अधनाउवसादव्यं.पुहर्तुया
गमहमं।सनाहंजनतासंवस्तुताविरुनुकानयत्॥जीर्णरुं.कंनै.उकयतगु.यत्रयनृक
मात्मकं।
यदाकानक.कृपुंतत्येवच॥वसिगुयं.दुदानयं.कासमावादिमं
युतं।अनिष्टयतंसिखार्यं.कननायकसंयुतं॥सुरुनामाप्रसिखानि.वितांगनविषवन
।अधिननपुष्टरुन.निखाद्यवलिम.ध.ग॥हंजनसंरुनंमाह.तासनंवनिवनांयस्वि
मारिमृखाकला.मान.दादकिनामुखं॥हंजनी.तासनी.वेव.माहनीवनिहिनी।माननी
दवी.युजाजयनमानरुत्॥मनुभवसमूचाय.वीनरुसमदवतां।कानयदसिया.गष